वर्ष 11, अंक 39,अक्तुबर-दिसंबर 2021

मूल्य
₹ 150/-

UGC Care Listed

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

नागफनी

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

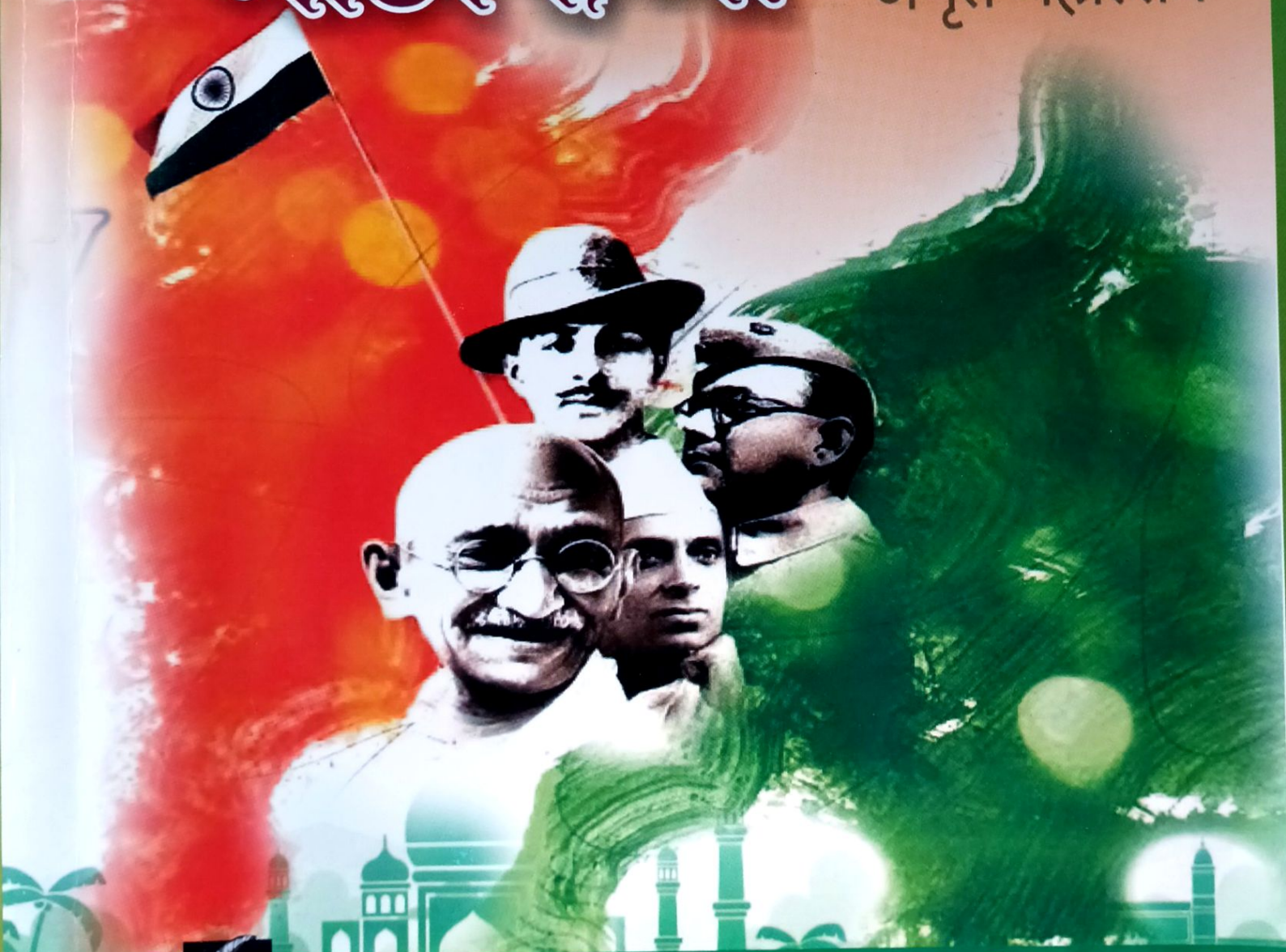

अस्मिता,चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

मामनि रयसम गोस्वामी की कथा साहित्य में चित्रित विधवा नारी जीवन

-डॉ. मनिका शइकीया
सहायक अध्यापिका, हिन्दी विभाग,
नगाँव गर्ल्स कॉलेज, असम

हिन्दी साहित्य में समकालीन अनेक कथाकारों ने अपने साहित्य में स्त्री की समस्याओं, आदर्शों अथवा संघर्षों को हुबहु आँकने का प्रयास किया है। चित्रा मुद्गल, उषा प्रियंवदा, मनु भंडारी, अनामिका, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, लवलीन, निरुपमा सेबती आदि महिला साहित्यकारों ने बड़े ही साहस पूर्वक समाज में सदियों से चलती आ रही परम्परागत मान्यताओं का खंडन करके स्त्री अस्मिता को प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया है। स्त्री के अंदर अपार सम्भावनाएँ, अपिसीम शक्तियाँ निहित है। पुरुषों के हाथों परिचालित स्त्री अपनी इच्छा-शक्ति, अपनी सम्भावनाओं, अपनी अहं को दबा रखने में विवश तो है, लेकिन उचित समय आते ही सारी बाधाओं कों तोड़ती हुई सामने आ जाती है। अपनी कथनी-करनी के माध्यम से विद्रोह करती है।

समकालीन असमिया कथाकारों ने भी सदियों से दबी-घूंटी स्त्री-समाज की व्यथाओं को पारम्परिक दृष्टिकोण से देखने के स्थान पर पारिवारिक, सामाजिक प्रतिकूल अवस्था को लांघकर प्रगतिवादी नारी सत्ता को प्रतिफलित किया है। मामनि रयसम गोस्वामी (इन्दिरा गोस्वामी), रीता चौधुरी, अरूपा पतंगीया कलिता, डॉ. ज्योति प्रसाद शइकीया, शिवानन्द काकति, अनुराधा शर्मा पुजारी, मणिकुन्तला भट्टाचार्य आदि कथाकारों ने नारी चरित्र को स्वकीयता प्रदान करने का सफल प्रयास किया है। ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त असम की प्रसिद्ध साहित्यिक इन्दिरा गोस्वामी (1941-2011) ने साहित्यिक जीवन की शुरुआत 'रामधेनु' पत्रिका के साथ की थी। इस पत्रिका में उनकी एक कहानी 'बीजानु' छपी थी। इसके पश्चात क्रमश: एक के बाद दूसरी रचना करती गयी और अपनी अभिनव रचनाशैली तथा वर्णन कौशल के कारण पाठकों में समादृत भी हुई। रामायणी साहित्य की गवेषिका डॉ. गोस्वामी ने 'माधव कन्दलि की रामायण' शीर्षक विषय पर सम्मानीय पी-एइच.डी की उपाधि प्राप्त की और दिल्ली विश्वविद्यालय में आधुनिक भारतीय भाषा विभाग में अध्यापना करके अवसर ग्रहण की। 1982 में साहित्य अकादेमि और 1999 में ज्ञानपीठ पुरस्कार लाभ करनेवाली डॉ. गोस्वामी ने पाँच कहानी संग्रह, तेरह उपन्यास, अनुवाद कर्म से साहित्य भंडार को समृद्ध किया। 'आधा लेखा दस्तावेज', 'दँताल हातीर उँये खोवा हाउदा', 'मामरे धरा तरोवाल', 'उदयभानुर चरित्र', 'अहिरण', 'छिन्न मस्तार मानुहटो' आदि उनके प्रमुख उपन्यासों में से हैं। इन्दिरा गोस्वामी के प्राय: उपन्यास तथा कहानियाँ स्त्री-जीवन की प्रतिबंधकता और उससे मुक्ति पाने की तड़पाहट लिए स्त्री का खुला प्रतिवादी स्वर का नवलेखन हैं। गोस्वामी द्वारा लिखित 'संस्कार' कहानी में पुत्रैच्छा रखनेवाले महाजन की नजर विधवा ब्राह्मणी दमयंती पर पड़ती है। दमयंती भी महाजन के प्रलोभन में फँस जाती है। एक ओर दारिद्यता, पेट की ज्वाला है तो दूसरी ओर वैधव्य जीवन की यंत्रणा, दो बेटियों का बोझ ! दमयंती महाजन की वासना का शिकार होकर संतान की माँ बननेवाली होती है। लेकिन तभी दमयंती की स्त्री चेतना जागृत हो उठती है। महाजन की पत्नी रुग्न होने के कारण संतान जन्म देने को अक्षम है। विवश दमयंती को पुत्र-प्राप्ति का जरिया मात्र समझनेवाला महाजन को योग्य प्रत्युत्तर देने का संकल्प लेकर गर्भस्थ संतान को बाँसबारी में दफना देती है। एक विधवा ब्राह्मणी स्वार्थपूर्ति हेतु पास आए महाजन की स्वार्थपूर्ति का पथ स्तब्ध कर देती है। उसका तर्क है- 'आखिर शाण्दिल्य गोत्र की ब्राह्मणी शुदिरीया (शुद्र का) भ्रूण क्यों धारण करेगी ?'

इन्दिरा गोस्वामी द्वारा लिखित एवं बहु चर्चित उपन्यास 'दताल हातीर उँये खोवा हाउदा' का एक प्रतिवादी नारी पात्र है – गिरिवाला। अति कम उम्र में ही विवाह हो जाने के बाद वह विधवा हो जाती है और मायका चली आती है। ब्राह्मण विधवा की मानवीय आशा-आकांक्षा, प्रेम-वासना और कठोर वैधव्य-व्रत से गिरिवाला का जीवन यातनादायक हो उठता है। लेकिन गिरिवाला साहसी और प्रतिवादी चरित्र है। चरित्रहीन मृत पति की स्मृति में ही वह अपना सुदीर्घ जीवन बीताना नहीं चाहती थी। वह जीवन को नई दृष्टि से देखना चाहती थी। अवदमित वासना की आग बुझाने वह मार्क साहब के करीब पहुँचती है। लेकिन मार्क साहब से सहमति न मिलने पर विषम परिस्थिति का शिकार बनी गिरिवाला अन्ततोगत्वा आत्महत्या तो करती है, लेकिन इस आत्महत्या के द्वारा प्रचलित समाज व्वस्था को तुच्छ करार दी गयी। दरसल डॉ. गोस्वामी का प्रत्येक स्त्री पात्र शुरुवात में दुर्बल, अवला, नि:स्व तो नजर आती है, लेकिन उसकी अन्तर्निहित शक्ति, तेजस्विता अथवा प्रतिवादी सत्वा उसे अधिक समय तक चुप रहने नहीं